अध्याय 12

अशुद्धता और बच्चा जनना

विभिन्न जन्तुओं से संबंधित अशुद्धता के परिणामों का वर्णन करने के पश्चात, यहोवा मनुष्यों, और वे कैसे अशुद्ध होते हैं, की ओर मुड़ा। मनुष्यों की अशुद्धता के बारे में विषय आरंभ करने का उपयुक्त स्थान था बच्चों का जनना। जन्म के समय अशुद्धता होती थी। परन्तु यह अशुद्धता, बच्चे से संबंधित नहीं थी - जैसा कुछ सोच सकते हैं। वरन यह बच्चा जनने वाली महिला को प्रभावित करती थी। अध्याय 12 बच्चा जनने में माता से जुड़ी हुई अशुद्धता के विषय में संक्षेप में बताता है, और फिर बताता है कि शुद्ध होने के लिए उसे क्या करना था। इस परिच्छेद से संबंधित अनेकों प्रश्न उठते हैं; उनकी चर्चा व्याख्या के उपसंहार में की गई है।

बच्चा जनने के कारण माता की अशुद्धता (12:1-5)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों से कह: जो स्त्री गर्भवती होकर लड़के को जन्म देती है तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; जिस प्रकार वह ऋतुमती होकर अशुद्ध रहा करती। [3]और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। [4]फिर वह स्त्री अपने शुद्ध करनेवाले रुधिर में तैंतीस दिन रहे; और जब तक उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे न हों तब तक वह न तो किसी पवित्र वस्तु को छूए, और न पवित्रस्थान में प्रवेश करे। [5]और यदि उसके लड़की पैदा हो, तो उसको ऋतुमती की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे; और फिर छियासठ दिन तक अपने शुद्ध करनेवाले रुधिर में रहे।"

आयतें 1-4. परिच्छेद जैसे आरंभ होता है, पाठक को फिर से आश्वस्त किया जाता है कि आने वाले नियम **यहोवा** ही से, जो **मूसा** में होकर इस्राएलियों से बोल रहा था, आए हैं। यह प्रकाशन "मूसा को" दिया गया था न कि "मूसा और हारून को," जैसा कि 11:1 और 13:1 में है।

यहोवा के सन्देश के प्रथम उपवाक्य में परिच्छेद के प्रमुख विषय का परिचय दिया गया है। **जो स्त्री गर्भवती होकर ... जन्म देती है ...**।[1] इससे आगे आने वाले नियम बच्चे जनने की विशिष्ट क्रिया से संबंधित हैं। इस शीर्षक के अन्तर्गत, दो संभावनाएं होंगी, क्योंकि वह या तो लड़के को (जिस स्थिति की चर्चा 12:2-4 में की गई है) अथवा लड़की को जन्म देगी (जिसकी चर्चा 12:5 में की गई है)।

लड़के के जन्म से संबंधित नियमों को तीन चरणों में समझाया गया है।

पहला चरण/ **लड़के** को जन्म देने के पश्चात, स्त्री **अशुद्ध** रहेगी (12:2)। हमें

यह ध्यान देना है कि यह नियम बताता है कि *वह* अशुद्ध होगी; यह *नहीं* कहा गया है कि बच्चा अशुद्ध होगा। इस अध्याय में न तो कुछ ऐसा कहा गया है और न ही किसी बात में निहित है कि नवजात शिशु अशुद्ध होगा!

यद्यपि बच्चा अशुद्ध नहीं था, किन्तु माता थी - **सात दिनों के लिए**। नियम यह विशेष उल्लेख करता है कि इस विषय में उसकी अशुद्धता उसकी ऋतुमती होकर अशुद्ध होने के समान ही होगी (देखिए 15:19-23)। उतने समय में जो भी उसे छू लेता या वह जिस पर भी बैठ जाती वह अशुद्ध हो जाता।

दूसरा चरण। **आठवें दिन**, उसके लड़के का **खतना** किया जाना था (12:3), जैसा कि अब्राहम के साथ बांधी गई वाचा की आवश्यकता थी (उत्पत्ति 17:10-13; 21:4)। इस आयत में मूसा द्वारा दिए गए नियम, इस प्रक्रिया को परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था के आधार पर आवश्यक मानते थे। इसी व्यवस्था के अन्तर्गत, यीशु नासरी का आठवें दिन खतना किया गया (लूका 2:21)। इस बात पर ध्यान खींचा गया है कि, चिकित्सकीय जानकारी के अनुसार, खतने के लिए आठवाँ दिन ही आदर्श समय है।[2] खतने के लिए आठवें दिन को निर्धारित करने से संबंधित नियमों में ईश्वरीय बुद्धिमता का प्रकट होना बाइबल के प्रेरित होने के प्रमाण के रूप में उदधृत किया गया है।

तीसरा चरण. अतिरिक्त **तैंतीस दिनों के लिए**, स्त्री **अपने शुद्ध करनेवाले रुधिर में तैंतीस दिन** रहे (12:4)। इसे NIV इस प्रकार अनुवाद करती है, "इसके पश्चात स्त्री को तैंतीस दिन प्रतीक्षा करनी होगी अपने रुधिर से शुद्ध होने के लिए।" प्रत्यक्षतः, स्त्री फिर भी अशुद्ध रहेगी, क्योंकि उसे शुद्ध कर देने वाले चढ़ावे को वह तैंतीस दिन के अन्त में चढ़ाएगी। परन्तु वह उतनी अशुद्ध नहीं होगी जितनी जनने के सात दिन बाद तक थी। उसकी अशुद्धता अब छूत द्वारा दूसरे को लगने वाली नहीं रहेगी; उसे छू लेने से कोई दूसरा अशुद्ध नहीं हो जाएगा। वह औरों के साथ अपने सामान्य संबंध फिर से आरंभ कर सकती थी, परन्तु वह इस सीमा तक अशुद्ध थी कि मिलापवाले तम्बू के पवित्र प्रांगण में प्रवेश नहीं कर सकती थी और उन दिनों में बलिदान नहीं चढ़ा सकती थी (12:4)।[3]

आयत 5. लड़के के जन्म के बाद माता को क्या करना है प्रगट करने के पश्चात, यहोवा ने **लड़की** के जन्म से संबंधित निर्देश दिए। मूलतः, नियम वही थी, अन्तर केवल यह था कि लड़की के जन्म के पश्चात माता दोगुने समय तक अशुद्ध रहती (**चौदह दिन** न कि सात) और पवित्र वस्तुओं के साथ संबंधित होने के लिए भी दो गुने समय तक प्रतिबंधित थी (**छियासठ दिन** न कि तैंतीस)।

स्त्री की अशुद्धता दूर करने के लिए आवश्यक बलिदान (12:6-8)

[6]"जब उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे हों, तब चाहे उसके बेटा हुआ हो चाहे बेटी, वह होमबलि के लिये एक वर्ष का भेड़ का बच्चा, और पापबलि के लिये कबूतरी का एक बच्चा या पंडुकी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाए। [7]तब याजक उसको यहोवा के सामने भेंट चढ़ाके उसके लिये प्रायश्चित्त करे;

और वह अपने रुधिर के बहने की अशुद्धता से छूटकर शुद्ध ठहरेगी। जिस स्त्री के लड़का या लड़की पैदा हो उसके लिये यही व्यवस्था है। ⁸और यदि उसके पास भेड़ या बकरी देने की पूँजी न हो, तो दो पंडुकी या कबूतरी के दो बच्चे, एक तो होमबलि और दूसरा पापबलि के लिये दे; और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगी।"

आयत 6. चाहे उसका बच्चा लड़का होता या लड़की, **बेटा हुआ हो** या **बेटी**, जनने के द्वारा माता अशुद्ध हो जाती और फिर कुछ दिन पारंपरिक अशुद्धता में बिताती। उस समय के अन्त पर, उसे मिलापवाले तम्बू में बलिदान लेकर आना था: **होमबलि के लिये एक वर्ष का भेड़ का बच्चा, और पापबलि के लिये कबूतरी का एक बच्चा या पंडुकी**। सामान्यतः, जब भी "होमबलि" को "पापबलि" के साथ जोड़ा जाता था, तब "पापबलि" को पहले चढ़ाया जाता था और "होमबलि" को उसके बाद। यद्यपि इस आयत में क्रम को उलटा दिया गया है, चढ़ावे चढ़ाने के समय संभवतः सामान्य क्रम का ही पालन किया जाता था।

आयत 7. याजक को बलिदान चढ़ाना था और इस प्रकार माता के लिए **प्रायश्चित्त करे**। इसका परिणाम होता कि माता **अपने रुधिर के बहने की अशुद्धता से छूटकर शुद्ध ठहरेगी**।[4] ये शब्द माता के अशुद्ध माने जाने के कारण का संकेत देते हैं; वह था "उसके रुधिर का बहना।" दूसरे शब्दों में बच्चे के जन्म से कोई अशुद्धता नहीं होती थी; वरन अशुद्धता का कारण था बच्चा जनने के बाद बहने वाला रक्त। यही निष्कर्ष 12:4, 5 में "शुद्ध करनेवाले रुधिर" के उल्लेख से भी मिलता है।

आयत 8. परिच्छेद का अन्त उन निर्धन माताओं के लिए प्रावधान के साथ होता है जिनके पास इस प्रायश्चित के चढ़ावे के लिए **भेड़ या बकरी देने की पूँजी न हो**। यहाँ कहा गया है कि यदि माता भेड़ न चढ़ा सके, तो वह **दो पंडुकी या कबूतरी के दो बच्चे** चढ़ाए (ठीक उसी प्रकार जैसे लैव्यव्यवस्था के नियम निर्धन लोगों के लिए संभव करते थे कि पापबलि के लिए दो भेड़ के स्थान पर दो पक्षियों को प्रयोग करें; देखें 5:7-10)। ये बलिदान भी वही परिणाम देते जो एक भेड़ और एक पक्षी देते: वे **उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगी**।

स्पष्ट शिक्षाएँ और अध्याय 12 के संबंध में असुविधाजनक प्रश्न

अध्याय 12 में कुछ सत्य बातों को स्पष्ट सिखाया गया है। (1) बच्चा जनने से माता "अशुद्ध" हो जाती थी। (2) यद्यपि माता अशुद्ध हो जाती थी, जो बच्चा जन्म लेता था वह अशुद्ध नहीं माना जाता था। (3) जो माता को अशुद्ध करता था वह बच्चे का जनना नहीं, परन्तु जन्म के पश्चात बहने वाला "रुधिर" था। (4) जो माता बच्चा जनने से अशुद्ध हो गई थी वह समय के व्यतीत होने और उचित चढ़ावों के चढ़ाने के द्वारा फिर से शुद्ध हो जाती थी।

इन स्पष्ट शिक्षाओं, जिन्हें सरलता से समझा जा सकता है, की तुलना में, कई असुविधाजनक प्रश्न शेष रहते हैं।

प्रथम, क्या परिच्छेद यह सिखाता है कि बच्चा जनने से हुई स्त्री की अशुद्धता

पापी होने के तुल्य है? दो बातें इसका संकेत करती हैं कि स्त्री का माँ बनना उसे पापी बनाता है: शुद्ध होने के लिए उसे "पापबलि" चढ़ानी होती थी (12:6, 8); और जो याजक उसके लिए बलिदान चढ़ाता था वह उसके लिए "प्रायश्चित करता" था (12:7)। इस निष्कर्ष के विरुद्ध यह तथ्य है कि बाइबल में अन्य स्थानों पर बच्चे होने को परमेश्वर से मिली आशीष के रूप में देखा गया है (26:9; व्यव. 28:11; भजन 113:9)। यह तर्क दिया जा सकता है कि परमेश्वर स्त्री को सन्तान न देता यदि उस सन्तान को जन्म देना पापी बना देता। इसके अतिरिक्त, यीशु के माता-पिता ने व्यवस्था के अनुसार बलिदान चढ़ाया: "पंडुकों का एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे" (लूका 2:24)।[5] कौन यह दावा करेगा कि परमेश्वर के पुत्र, मानवजाति के उद्धारकर्ता को संसार में लाने के द्वारा यीशु की माता ने पाप किया?

तो फिर, पारिभाषिक शब्द "पापबलि" और "प्रायश्चित" को कैसे समझाया जा सकता है? संभवतः कुछ सीमा तक इन पदों के कारण ही कुछ व्याख्याकर्ता और अनुवादक इस परिच्छेद में इब्रानी शब्द (חַטָּאת, *छतात)* के लिए "पवित्रिकरण भेंट" को प्रयोग करना पसन्द करते हैं, न कि "पापबलि" को। "पवित्रीकरण" अनुष्ठानिक अशुद्धता के लिए अनिवार्य है, लैव्यव्यवस्था 12 में जिसके विषय बताया गया है; परन्तु शब्द "पवित्रीकरण" पाप से शुद्ध करने के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है, जैसा कि अन्य परिच्छेदों में है। इसी प्रकार, लैव्यव्यवस्था 12:7 का "प्रायश्चित" शब्द अनुष्ठानिक अशुद्धता के दाग को मिटाने के लिए भी प्रयोग हो सकता है, न कि उस पाप के लिए जो मनुष्य को परमेश्वर से पृथक कर देता है। इसलिए संभव है कि शब्द "पापबलि" और "प्रायश्चित" पाप के लिए चढ़ावे और परिणामस्वरूप मिलने वाली क्षमा के लिए नहीं परन्तु अनुष्ठानिक अशुद्धता के हटाने के लिए प्रयोग हुए हैं।

एक अन्य संभावना है कि "पापबलि" और "होमबलि" बच्चा जनने से संबंधित किसी पाप के प्रायश्चित के लिए नहीं, परन्तु लंबे समय तक यहोवा की पवित्र सेवा से प्रतिबंधित किए गए इस्राएली की पुनर्नियुक्ति के लिए थे। चालीस या अस्सी दिन के अशुद्धता के विस्तृत समय में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि स्त्री ने कोई पाप कर लिया होगा, इसलिए उसे पापबलि के द्वारा उस पाप का निवारण करना था और होमबलि के द्वारा अपने आप को यहोवा के प्रति पुनःसमर्पित। चढ़ावे के द्वारा जो "प्रायश्चित" किया जाता था वह तब "क्षमा" के तुल्य होगा - न कि बच्चा जनने के किसी "पाप" के लिए, वरन वास्तविक पापों के लिए जो संभवतः उसने किए होंगे।

दूसरे, जब लड़के के होने की तुलना में, स्त्री के लड़की होती तो यहोवा को अशुद्धता का लंबा समय (दोगुना लंबा) क्यों चाहिए था? इस प्रश्न के कई उत्तर दिए गए हैं। कुछ ने सुझाव दिया है कि लड़के का खतना किसी रीति से शुद्ध करने वाली क्रिया थी। आठवें दिन उसके होने के तुरंत बाद, माता फिर से शुद्ध हो जाती थी। क्योंकि लड़कियों का खतना नहीं होता था इसलिए माता अधिक लंबे समय तक अशुद्ध रहती थी।[6] एक और विचार है कि स्त्रियों के अधीन होने के कारण लड़की होने पर माता अधिक लंबे समय तक अशुद्ध रहती थी। क्योंकि मिलापवाले

तम्बू की सेवकाई में स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा कम संलग्न होती थीं, क्योंकि उनकी सेवा कम महत्व की थी इसलिए लड़की होने पर माता अधिक समय तक अशुद्ध रहती थी। एक अन्य संभावना यौन अंगों के स्राव (योनी से रक्त स्राव) से संबंधित है, जो कि कभी-कभी नवजात लड़कियों में होता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऐसी कोई दशा अन्य और कोई अशुद्धता उत्पन्न नहीं करेगी, स्त्रियों को अपनी शिशु लड़कियों के साथ अस्सी दिन तक अशुद्ध रहना था।[7] इस प्रश्न का कोई भी उत्तर संतोषजनक नहीं है, इसलिए अन्ततः छात्र को बस स्वीकार कर लेना पड़ेगा कि कोई भी इसका उत्तर नहीं जानता है।

तीसरा, ये नियम दिए ही क्यों गए? लेख कहता है कि यह नियम था, मात्र सुझाव नहीं: "जिस स्त्री के लड़का या लड़की पैदा हो उसके लिये यही व्यवस्था है" (12:7)। परमेश्वर ऐसा नियम क्यों देगा?

स्वयं परिच्छेद व्यवस्था को बच्चा जनने में बहने वाले रक्त के साथ जोड़ता है।[8] लैव्यव्यवस्था की पुस्तक एक अन्य स्थान पर रक्त के महत्व के बारे में कहती है।[9] यह तथ्य कि रक्त जीवन के लिए अनिवार्य है (17:11) सुझाव देता है कि रक्त का स्राव - जैसा कि स्त्रियों की माहवारी के समय होता है (15:19-24) - इतना होता है कि किसी रीति से उसका महत्व पहचाना जाना चाहिए। उसके शरीर से बहने वाला रक्त उसे अशुद्ध कर देता था, और यह तथ्य रक्त के महत्व का अंगीकार करता था। स्त्री का अशुद्ध होना यह प्रकट कर देता था कि बच्चा जनने में उसका रक्त बह जाने से कुछ महत्वपूर्ण हुआ है। गौर्डन जे. वेनहैम ने रक्त के महत्व पर टिप्पणी की:

> ... ऐसा शरीर जिस से रक्त बह रहा हो या कोई स्राव हो रहा हो स्वस्थ नहीं है और इस कारण अशुद्ध है। रक्त के बह जाने से मृत्यु हो सकती है, जो सामान्य स्वास्थ्य जीवन का विलोम है। जिस किसी का रक्त बह रहा हो वह कम से कम अस्वस्थ हो जाने के खतरे में तो है और इसलिए अशुद्ध है। इस प्रकार रक्त सबसे प्रभावी अनुष्ठानिक स्वच्छ करने वाला ("लहू ही से प्रायश्चित्त होता है," 17:11) और गलत स्थान पर सबसे अधिक दूषित करने वाला होता है।[10]

एक अन्य संभावना लैव्यव्यवस्था के कथन की समपूरक है। आज के बाइबल छात्रों के लिए इस संभावना को समझने के लिए, अशुद्ध हो जाने के भावनात्मक प्रभाव को समझना पड़ेगा। आधुनिक पाठक यह मान लेते हैं कि स्त्री का अशुद्ध हो जाना उसपर एक अवांछनीय कलंक लगा देता है। लोग आज मान लेते हैं कि कोई भी अशुद्ध नहीं कहलाना चाहता है; अशुद्ध होना अपमानजनक और लज्जा की बात होगी। परन्तु पुराने नियम के समय में अशुद्धता अनेकों कारणों से हो सकती थी, और हर कोई किसी न किसी समय पर (या कई बार) अशुद्ध हुआ होगा। सभी समझते थे कि अशुद्ध होने से अभिप्राय है अनुष्ठानिक अशुद्धता, न कि पापी होना; और इसके समाधान में चाहे समय लगे तथा असुविधा हो, परन्तु यह सरलता से सुलझा ली जाने वाली समस्या थी। इसलिए स्त्री का अशुद्ध होने का अर्थ यह नहीं था कि वह अपमानित अथवा कम दर्जे की हो गई है।

इस दृष्टिकोण से स्त्री की अशुद्धता को भिन्न रीति से देखना संभव हो जाता है।

माता के लिए अशुद्ध होने से क्या कुछ हो जाता था? इसका अर्थ होता था के अशुद्ध स्त्री को छुआ नहीं जाएगा; और जहाँ वह बैठी है वहाँ जान-बूझते हुए कोई नहीं बैठेगा। इसका यह भी अभिप्राय हो सकता था कि जिन वस्तुओं को वह छूएगी (जैसे कि घर के बर्तन) वे भी अशुद्ध हो जाएँगे। दूसरे शब्दों में उसकी अशुद्धता उसके लिए एकान्त उत्पन्न कर देती थी। एक नई माँ के लिए, एकान्त का अर्थ था कि वह दैनिक जीवन के दायित्वों से मुक्त होकर अपने नवजात शिशु के साथ, जो उससे अशुद्ध नहीं होता था, सारा समय बिता सकती थी।

नई माँ के लिए अशुद्धता का समय ऐसा समय था जब वह अधिकांशतः ऐसे लोगों और वस्तुओं से पृथक कर दी जाती थी जिनसे रोग लगने की संभावना थी। डॉन डिवेल्ट ने यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया:

> स्वच्छता और चिकित्सा से संबंधित कड़े नियम तुरंत ध्यान में आते हैं। [A] जन्म के बाद बच्चे के मर जाने की अधिक संभावना लगभग सदा ही संपर्क द्वारा हुए संक्रमण से होती है। यदि माता और शिशु 40 दिन तक पृथक रखे जाते हैं तो उनके बचे रहने की संभावना बहुत अधिक हो जाती है।[11]

इस कारण से वह अपने शिशु की देखभाल करने के लिए, उसके साथ इस "जन्म के बाद के पृथक रहने और एकान्त के समय" में संबंध के बंधन को प्रगाढ़ करने के लिए, स्वतंत्र रहती थी।[12] यह समय उसे "फिर तुरंत गर्भवती हो जाने से भी बचाए रखता था।"[13]

जब परिस्थिति को इस दृष्टिकोण से देखा जाए, तो एक नवजात लड़की (संभवतः इस लिए क्योंकि वह नवजात लड़के से कम बलवान मानी जाती थी) शिशु लड़के से अधिक सौभाग्यशाली थी क्योंकि उसके पास अपनी माता के साथ एकान्त में समय बिताने के लिए दोगुना समय (अस्सी दिन) था। किसी भी स्थिति में, यदि यह विचार सही है तो, बच्चा जनने के पश्चात स्त्री का अशुद्ध होना आशीष के रूप में देखा जा सकता है।[14]

उपसंहार। यद्यपि बच्चे जनने के साथ जुड़े हुए अशुद्धता के नियमों के विषय में उठने वाले प्रश्नों के लिए केवल अनिश्चित उत्तर ही दिए जा सकते हैं, पाठकों को तीन निश्चितताओं को मानना चाहिए। (1) उस समय व्यवस्था स्त्रियों से जो भी माँग करती थी वह आज नहीं करती है, क्योंकि मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था हटा ली गई है। (2) पुराने नियम के समय में परमेश्वर जो कुछ भी अपने लोगों से चाहता था वह उनकी सर्वाधिक भलाई के लिए था। (3) बच्चे जनने से संबंधित नियम इस बात का प्रमाण हैं कि परमेश्वर उस महत्वपूर्ण पल के विषय चिंता करता है जब एक माता अपने शिशु को संसार में लाती है। इस्राएल के लिए वह समय पवित्र था, उसे एकान्त के समय और बलिदान चढ़ाने के साथ जोड़ा गया था। यह तथ्य संकेत देता है कि आज भी बच्चे जनने को (जैसा वह सामान्यतः समझा जाता है) महत्वपूर्ण अवसर मानना चाहिए!

अनुप्रयोग

प्रसव के विषय में बाइबल का दृष्टिकोण (अध्याय 12)

यद्यपि लैव्यव्यवस्था 12 प्रसव के विषय में बात करती है, फिर भी इसमें वह सब सम्मिलित नहीं है जिसे आज के मसीहियों को इस विषय में समझने की आवश्यकता है। एक बालक को जन्म देने के कार्य के विषय में बाइबल क्या सिखाती या संकेत करती है?

प्रसव में पापमय स्वरूप शामिल नहीं है। क्रिस्टोफ़र जे. एच. राइट ने तर्क दिया कि यह तथ्य कि अशुद्धता का अर्थ आवश्यक तौर पर नैतिक अशुद्धता नहीं है यह लैव्यव्यवस्था 12 के लिए अत्यन्त प्रासंगिक है। उन्होंने लिखा,

> उस दृष्टिकोण के अनुसार कि [पुराना नियम] बालक को जन्म देने को परमेश्वर की आज्ञा (उत्पत्ति 1:28), और उसके सर्वश्रेष्ठ उपहारों (भजन 127:3; 128:3-6) और सबसे उच्चतम मानवीय आनन्द के रूप में प्रस्तुत करता है, यह कल्पना करना असम्भव है कि, यहाँ पर प्रसव से जुड़ी कोई भी अशुद्धता किसी न किसी प्रकार से संकेत करती है कि वह अपने आप में पापमय थी। न ही, उत्पत्ति 2:24 के दृष्टिकोण के अनुसार, और न ही श्रेष्ठगीत के वर्णन में, क्या ऐसा इस कारण था क्योंकि पति और पत्नी के बीच यौन सम्बन्धों को पापमय समझा जाता था।[15]

एक इस्राएली माता जिसने बालक को जन्म दिया था, वह अशुद्ध हो गई थी, न कि पापमय। जो यौन क्रिया उसके गर्भवती होने का कारण बनी थी वह अपने आप में पापमय नहीं थी। उदाहरण के लिए, यदि उसमें पाप सम्मिलित था, और वह जोड़ा विवाहित नहीं था, तो बालक के जन्म को पाप के एक परिणाम के रूप में देखा जा सकता था। बहुत से धर्मशास्त्रियों और टिप्पणीकारों के दृष्टिकोण के विपरीत, जो बालक जन्मा है वह पाप से मुक्त है। एक व्यापक मत यह है कि सभी बालक "वास्तविक पाप" के श्राप के अधीन जन्म लेते है, और यह कि वे आदम के पाप के दोष के भागी होते हैं। इस स्थिति के चरम दृष्टिकोण को "सम्पूर्ण वंशानुगत अनैतिकता" कहा जाता है, और यह प्राचीन केल्विनिज्म के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है। बाइबल इस सिद्धांत को नहीं सिखाती। भजन 51:5 का उपयोग इस दृष्टिकोण की शिक्षा देने के लिए किया गया है; परन्तु इस आयत को सावधानी से परखने पर, पाठक यह देख सकता है कि यह इस स्थिति का समर्थन नहीं करती है। यीशु ने कहा, "बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है" (मत्ती 19:14)। इस कथन के साथ, उसने सदा के लिए छोटे बालकों को पापमय और न ही अशुद्ध कहा, बल्कि उनके पापरहित और बहुमूल्य होने की घोषणा की।

प्रसव को एक बड़ी आशीष माना गया है। इसे पापमय समझे जाने की बजाए, बाइबल में प्रसव को एक बड़ी आशीष माना गया है। एक बालक को जन्म देने के लिए अक्षम होने को एक अत्यन्त दुःख भरी बात समझा जाता था। इस सत्य को स्पष्ट कथनों और उदाहरण दोनों के द्वारा सिखाया गया है।

बालक होने के विषय में बाइबल विशिष्ट तौर पर क्या कहती है इसके सम्बन्ध में, सबसे आकर्षक वाक्यांशों में से एक भजन संहिता 127:3-5 में पाया जाता है:

> देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है। जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही जवानी के लड़के होते हैं। क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसने अपने तर्कश को उनसे भर लिया हो!

प्रसव के अनेक उदाहरण यह व्याख्या करते हैं कि एक बालक का जन्म लेना एक धन्य और आनन्द भरी घटना थी, और एक ऐसी घटना जिसका कारण परमेश्वर था। आइए हम इनमें से कुछ उदाहरणों पर विचार करें।

इसहाक का जन्म। परमेश्वर ने अब्राहम से यह प्रतिज्ञा की और कहा कि उसकी पत्नी सारा के द्वारा उसे एक पुत्र प्राप्त होगा, हालाँकि तब भी जबकि वह लगभग एक सौ वर्ष की थी। सारा को उस पर विश्वास करने में परेशानी हुई जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। यहाँ तक कि वह हंस पड़ी, क्योंकि उसके लिए यह बात कि परमेश्वर उसे उसके अस्सीवें वर्षों के अन्त में एक सन्तान देगा एक उपहास के समान जान पड़ी! हालाँकि, जब वह नब्बे वर्ष की थी तो उसने इसहाक को जन्म दिया! इसके बाद उसने कहा, "परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित किया है; इसलिये सब सुनने वाले भी मेरे साथ प्रफुल्लित होंगे" (उत्पत्ति 21:6)। एक पुत्र को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त होना एक आनंदमय अवसर था!

ओबेद का जन्म। जब रूत और बोअज़ का पुत्र ओबेद उत्पन्न हुआ, उसका जन्म यरूशलेम में आनन्द मनाने का एक कारण बना। नगर की स्त्रियों ने नाओमी को, लड़के की दादी को, यह कहते हुए शुभकामनाएँ दीं, "यहोवा धन्य है, जिसने तुझे आज छुड़ानेवाले कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा; ... । इस्राएल में इसका बड़ा नाम हो। ... और यह तेरे जी में जी ले आने वाला और तेरा बुढ़ापे में पालने वाला हो" (रूत 4:14, 15)। उस बालक जन्म उसके दादा-दादी के लिए आनन्द का कारण था!

शमूएल का जन्म। हन्ना के "कोई बालक उत्पन्न नहीं हुआ था," क्योंकि "यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी" (1 शमूएल 1:2, 5)। हालाँकि, उसका पति एल्काना, उससे अपनी दूसरी पत्नी से अधिक प्रेम रखता था, जिसने उसे पुत्र और पुत्रियाँ दोनों दिए थे। हन्ना अपने बाँझपन के कारण बहुत दुःखी थी (और इस तथ्य से भी कि एल्काना की दूसरी पत्नी उसे ताने दिया करती थी), इसी कारण उसने प्रार्थना की और कहा कि यहोवा उसकी कोख को खोल दे। यहोवा ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया, और शमूएल का जन्म हुआ (1 शमूएल 1:20)। तब हन्ना ने प्रार्थना करके कहा, "मेरा मन यहोवा के कारण मगन है; मेरा सींग यहोवा के कारण ऊँचा हुआ" (1 शमूएल 2:1)। उसने आनन्द किया कि अन्त में यहोवा ने उसे एक बालक दिया था![16]

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जन्म। नया नियम कहता है कि ज़करयाह और इलीशिबा धर्मी थे, "परन्तु उनके कोई भी सन्तान न थी, क्योंकि इलीशिबा बाँझ थी, और वे दोनों बूढ़े थे" (लूका 1:7)। इसके बाद एक स्वर्गदूत ज़करयाह के सामने

यह प्रतिज्ञा देने और यह बताने के लिए प्रकट हुआ कि उसका और इलीशिबा का एक पुत्र उत्पन्न होगा और वह उस बालक का नाम "यूहन्ना" रखे (लूका 1:13)। स्वर्गदूत ने इसके साथ ही कहा, "तुझे आनन्द और हर्ष होगा, और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे" (लूका 1:14)। जब इलीशिबा गर्भवती हुई, तो उसने इस बात पर आनन्द किया कि, "मनुष्यों में मेरा अपमान दूर करने के लिये, प्रभु ने इन दिनों में कृपादृष्टि करके मेरे लिये ऐसा किया है" (लूका 1:25)। लूका ने कहा, जब यूहन्ना का जन्म हुआ, "उसके [इलीशिबा के] पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुन कर कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की है, उसके साथ आनन्द मनाया" (लूका 1:58)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जन्म आनन्द का कारण बना!

यीशु का जन्म। निस्संदेह, एक बालक जिसका जन्म आनन्द का कारण बना उसका सबसे बड़ा उदाहरण बैतलहम में यीशु मसीह का जन्म था। जब उसने कुंवारी मरियम के द्वारा जन्म लिया, तो एक स्वर्गदूत ने कहा कि उसका जन्म "सभी लोगों के लिए ... आनन्द का अच्छा समाचार" था (लूका 2:10)। इसके बाद स्वर्गदूतों ने आनन्द मनाया, यह गाते हुए, "आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो" (लूका 2:14)। हालाँकि यीशु की माता मरियम ने, उसके शुद्धिकरण के दिन पूरे होने पर, व्यवस्था के अनुसार एक बलिदान चढ़ाया (लूका 2:22), जो कोई यीशु के ईश्वरत्व में विश्वास करता है वह इसमें सम्मिलित किसी भी पापमय बात को नहीं देख सकता। उसी प्रकार, किसी भी बालक के जन्म के द्वारा किसी न किसी प्रकार से माता को पापमय बनते देखना असम्भव है।

प्रसव को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर के रूप में मान्यता मिलनी चाहिए। लैव्यव्यवस्था 12 में, हम सीखते हैं कि एक बालक के जन्म को यहोवा ने अशुद्धता सम्बन्धी विशेष नियमों के आवश्यक होने के लिए पर्याप्त महत्वपूर्ण समझा। युगों से, अधिकांश संस्कृतियों ने प्रसव को अत्यन्त महत्वपूर्ण तौर पर देखा है, ऐसी घटना जिसका चिन्ह उपहार देना, शुभकामनाएं देना, और आनन्द मनाना है। लैव्यव्यवस्था में परमेश्वर का उदाहरण यह संकेत करता है कि एक बालक के जन्म का विशेष सम्मान करना उचित बात है। सम्भवतः मसीही, यह जानकर कि एक बालक परमेश्वर की ओर से एक उपहार है, एक बालक के जन्म में एक औसत व्यक्ति से अधिक करना चाहिए। माता और पिता ने एक आत्मा जो सदैव जीवित रहेगी उसे संसार में लाने के लिए परमेश्वर का सहयोग किया है! इस तथ्य को ध्यान में रखा जाना चाहिए, स्मरण किया जाना चाहिए, प्रसारित, और स्मरणीय बनाया जाना चाहिए!

हर कोई बालक के जन्म को महत्व नहीं देता। कई बार जब एक माँ एक बालक को जन्म नहीं देना चाहती तो वह अनुमानित तौर पर गर्भपात करवाती है, एक ऐसा कार्य जिसमें एक गर्भ को जानबूझकर गिराया जाता है, या एक अजन्मे शिशु की हत्या, की जाती है। अन्य लोग दिखाते हैं कि वे उनके कल्याण की चिंता के बिना बहुत से बच्चों को जन्म देकर उन्हें एकत्र नहीं करते हैं। समाज जो भी सोचता है, परमेश्वर प्रसव की अद्‌भुत प्रक्रिया का इस तरह से सस्ता किए जाने से प्रसन्न

नहीं है।

प्रसव माता-पिता के ऊपर भारी ज़िम्मेदारी डाल देता है। बाइबल का शेष भाग इस बात को स्पष्ट करता है कि माता-पिताओं के महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं।

पहला, जो लोग संतानों को उत्पन्न करते हैं उनका उत्तरदायित्व पवित्रशास्त्र आधारित परिवारों का निर्माण करना है-जो यह है कि, माता - पिता और बच्चों से मिलकर बने परिवार। पहले से ही, अमेरिका में लगभग आधे बच्चे अकेली माताओं के पास जन्म लेते हैं। हमारी संतानों के प्रति हमारी एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है, जितना सम्भव हो सके, उन्हें एक माता और पिता दोनों मिलें।

दूसरा, माता-पिता को उनके बच्चों का भरण पोषण, सुरक्षा, और उनकी देखभाल करनी है। उन्हें उनसे प्रेम करना चाहिए, उन्हें सही कार्य करने के लिए निर्देश देने चाहिए, उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाना चाहिए, और उन्हें मसीही बनने और स्वर्ग में जाने के लिए सहायता करनी चाहिए! प्रत्येक अभिभावक की उच्च प्राथमिकता होनी चाहिए कि, "प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका [बच्चों का] पालन-पोषण करो" (इफि. 6:4)।

एक पति आर पत्नी को एक बच्चे को इस संसार में लाने को सबसे बड़ी आशीषों के रूप में स्वीकार करना चाहिए जिसका वे कभी आनन्द लेंगे और सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी भी जिसे वे कभी निभाएंगे। जिस प्रकार लैव्यव्यवस्था 12 में परमेश्वर ने इसके महत्व को मान्यता दी, आओ हम, अलग-अलग व्यक्तियों और मण्डलियों के रूप में इसके महत्व को स्वीकार करें - और इसके अनुसार कार्य करें।

समाप्ति नोट्स

[1]"जन्म देती है" זָרַע *(ज़ारा')* का वास्तविक अर्थ है "बीज उत्पन्न करती है।" [2]आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था,* द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1980), 134-35. [3]वह "पवित्र" माने गए भोजन को खाने से भी प्रतिबंधित रहेगी क्योंकि वह याजकों को दिया गया था या बलिदान की रूप में निवासस्थान में लाया गया था। [4]रक्त का जो "बहना" מָקוֹר *(मकोर)* है वह यथार्थ में उसके रक्त का "सोता" है। [5]यह तथ्य कि यूसुफ़ और मरियम ने दो पक्षियों को चढ़ाया था दिखाता है कि वे व्यवस्था का पालन करने के लिए तत्पर थे और वे "निर्धन" होने की श्रेणी में भी आते थे। [6]किन्तु न तो इस लेख में और न ही किसी अन्य स्थान पर ऐसा कोई भी संकेत तक नहीं है कि खतना करने का लड़के को शुद्ध करने से कोई संबंध था, और उसकी माता के साथ तो कदापि नहीं। [7]इन तथा अन्य संभावनाओं पर चर्चा के लिए देखिए क्लाइड एम. वुड्स एण्ड जस्टिन एम रॉजर्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती,* द कॉलेज प्रैस, कॉमेन्ट्री (जोपलिन, मो.: कॉलेज प्रैस पबलिशिंग को., 2006), 89, n. 204; रौए गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती,* द NIV एप्प्लिकेशन कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडर्वैन, 2004), 222-23; गौर्डन जे. वैन्हैम, *द बुक ऑफ़ लेविटिकस,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 188. [8]रिचर्ड एन. बोएस ने लिखा, "इन सभी नियमों की कुंजी रक्त का बहना है। जिस प्रकार से मासिक रक्त बहने के लिए नियम हैं (लैव्य. 15), उसी प्रकार जनने के समय रक्त बहने के संबंध में असामान्य नियम हैं (12:4)" (रिचर्ड एन. बोएस, *लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती,* वेस्टमिनिस्टर बाइबल कम्पैनियन [लुईविल्ले: वेस्टमिनिस्टर जौन नौक्स प्रैस, 2008], 44)। [9]यह भी हो सकता है कि पशुओं को "शुद्ध" और "अशुद्ध" श्रेणियों में विभाजित करने में रक्त की

कोई भूमिका हो। शुद्ध पशु शाकाहारी थे; सभी अशुद्ध पशु मांसाहारी या सर्वभक्षी (जो अन्य जीवों को खाते हैं) थे। इसी प्रकार से, जैसा पहले सुझाव दिया गया है, यह प्रतीत होता है कि अशुद्ध पक्षियों के "मांसाहारी" होने की संभावना अधिक थी। यही बात मछलियों के बारे में कहनी कठिन है, क्योंकि संभवतः सभी मछलियाँ अन्य सभी जन्तुओं को खा लेती हैं; परन्तु संभवतः अशुद्ध मछलियों के मृतक जन्तुओं को खाने की संभावना अधिक है। इसी प्रकार से लहू खाने से जन्तु अशुद्ध हो जाता है नियम को कीड़ों पर लागू करना कठिन है, जब तक कि मच्छर, पिस्सू, किलनी, और अन्य ऐसे कीड़े जो मनुष्य या अन्य जन्तुओं के रक्त पर जीवित रहते हैं, उन सभी को अशुद्ध ना माना जाए। [10]वेनहैम, 188.

[11]डॉन डिवेल्ट, *लैव्यव्यवस्था*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मो.: कॉलेज प्रेस, 1975), 191. [12]राईट, 139. [13]जौन ई. हार्टले, *लैव्यव्यवस्था*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 4 (डैलस: वर्ड बुक्स, 1992), 170. [14]यह दृष्टिकोण बौएस के दृष्टिकोण के विरुद्ध है, जिसने कहा, "लैव्यव्यवस्था 12 भिन्न होता यदि स्त्रियों के मत को बराबरी का महत्व मिलता," जिससे तात्पर्य था कि यह अध्याय स्त्रियों को महत्व न देने का मत रखने वाले किसी व्यक्ति ने लिखा था। (बौएस, 44.) स्त्रियों के विरुद्ध पक्षपात के करने के स्थान पर, इन निर्देशों को स्त्रियों के पक्ष में देखा जा सकता है। [15]राइट, 139. [16]ईश्वरीय हस्तक्षेप के द्वारा हल किया गया बाँझपन का एक और मामला उस शूनेमिन स्त्री की कहानी में पाया जाता है जिसने भविष्यद्वक्ता एलीशा के द्वारा, स्पष्ट तौर पर, परमेश्वर से उसे एक पुत्र देने की प्रार्थना करने के बाद, एक पुत्र को जन्म दिया था (2 राजाओं 4:8-17)।